वैदिक साहित्य में महिला विकास के विभिन्न आयाम

Various Dimensions of Women Development in Vedic Literature

Paper Submission: 05/04/2021, Date of Acceptance: 14/04/2021, Date of Publication: 25/04/2021

भूपेन्द्र कुमार मीना
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
महाराजा सूरजमल बृज
विश्वविद्यालय,
भरतपुर राजस्थान, भारत

सारांश

महिला विकास सामाजिक विकास की पूर्व शर्त है : महिला सृष्टि की रचनाकार है । एक महिला के विकास के बिना समाज का विकास संभव नहीं है। भारतीय महिला विकास को समझने के लिए महिलाओं की वैदिककालीन स्थिति को समझना आवश्यक है। वैदिककाल महिला विकास का स्वर्ण काल माना जाता है। इस काल में महिला स्वतंत्रतापूर्वक अपना जीवनयापन करती थी। शिक्षा के क्षेत्र में इस समय महिलाओं का विकास चरम पर था। महिलाएं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। वैदिक साहित्य की रचना में भी महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वेदों की रचना में सहयोग करने वाली प्रमुख महिलाओं में अपाला, विश्ववरा, शशि, लोपा मुद्रा आदि प्रमुख थी । इसके साथ ही महिला एवं राजनीतिक जीवन में राजाओं की सलाहकार, युद्ध में सहयोगी एवं महान योद्धा होती थी। सामाजिक जीवन में भी महिलाओं का स्थान सर्वोपरि था । कोई भी धार्मिक कार्य महिलाओं के बिना संभव नहीं था। महिला को शक्ति रूप में पूजा जाता था । बाल–विवाह, सती–प्रथा, बलात्कार, कन्याभ्रूण हत्या, शोषण जैसी प्रथाओं का अभाव था। इस प्रकार वैदिककाल महिला विकास का चरम काल था । किस काल से प्रेरणा लेकर हम आधुनिक काल में महिला विकास को एक नवीन दिशा दे सकते हैं।

Women's development is the precondition for social development: woman is the creator of the universe. Development of society is not possible without the development of a woman. To understand Indian women's development it is necessary to understand the Vedic condition of women. Vedic period is considered to be the golden period of female development. Women used to live independently during this period. At this time, the development of women in education was at a peak. Women played an important role in the political, social, economic and educational fields. Women also played an important role in the creation of Vedic literature. Among the prominent women who assisted in the creation of Vedas, Apala, Vishvavara, Shashi, Lopa Mudra, etc. were prominent. Along with this, in women and political life, kings used to be advisors, allies in war and great warriors. The place of women was also paramount in social life. No religious work was possible without women. The woman was worshiped in Shakti form. There was a lack of practices like child marriage, sati, rape, female murders, exploitation. Thus Vedic period was the peak period of female development. Taking inspiration from which period, we can give a new direction to the development of women in the modern period.

मुख्य शब्द : महिला, विकास, सामाजिक विकास
Women, Development, Social Development

प्रस्तावना

मानव विकास की अवधारणा सार्वभौमिक अवधारणा है। सभी राष्ट्र सनातन काल से मानव विकास हेतु विभिन्न प्रयास करते रहे हैं। महिलाओं का विकास मानव विकास की पूर्व शर्त है। महिला इस सृष्टि की रचनाकार है, वह सृष्टि का सृजन करती है। अतः मानव विकास की संकल्पना महिला विकास के बिना असम्भव है। महिला विकास के लिए यह आवश्यक है कि महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से उन्नत किया जाये। इस हेतु आवश्यक है कि उन्हें सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता तथा अवसर की समानता प्राप्त हो। किसी राष्ट्र में विकास के विभिन्न आयामों को समझने के लिए उस राष्ट्र की सनातन परम्पराओं और प्राचीन साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। भारत में महिला विकास की संकल्पना को समझने के लिए हमें वैदिक साहित्य

का सहारा लेना होगा। भारतीय वैदिक दर्शन महिला विकास का स्वर्णकाल माना जाता है। इस काल में महिलायें हर क्षेत्र में विकास के चरम पर थी। इस शोध में वैदिक साहित्य में महिला विकास के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. वैदिक साहित्य में महिला विकास के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना।
2. वैदिक काल में महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. वैदिक कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
4. महिला विकास की दिशा में वैदिक साहित्य से प्रेरणा लेकर नवीन सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

महिला विकास वर्तमान में सामाजिक विकास हेतु अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान में महिलाओं के विकास के मार्ग को अवरूद्ध करने वाली अनेक कुरूतियां समाज में मौजूद है। इस अध्ययन में वैदिक कालीन महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व शैक्षणिक स्थिति के अध्ययन को शामिल किया गया है। इस अध्ययन में वैदिक साहित्य के तथ्यों के माध्यम से वर्तमान समाज को नवीन दिशा दी गयी है।

इस शोध में निम्न परिकल्पनाओं के परीक्षण का प्रयास किया गया है–

1. वैदिक काल में महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति अपने चरम पर थी।
2. वैदिक कालीन महिलाऐं राजनीतिक रूप से सशक्त एवं विकसित थी।
3. वैदिक काल में महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था।
4. वैदिक साहित्य महिला विकास को नई दिशा देता है।
5. इन परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए आगमनात्मक व निगमनात्मक विधियों का सहारा लिया गया है।

विषय वस्तु

महिला विकास के विभिन्न आयामों में महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास को सम्मिलित किया जा सकता है।

वैदिक कालीन महिला शिक्षा

वैदिक काल को महिला विकास का स्वर्णयुग माना जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में यह युग महिला विकास के चरम शिखर पर था। बालक व बालिकाओं को इस काल में समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। बालकों की भांति बालिकाओं का भी उपनयन संस्कार होता था। बालिकाऐं ऋषियों के आश्रम में सह–शिक्षा प्राप्त करती थी। अपनी शिक्षा पूर्ण करके ही बालिकाऐं विवाह करती थी। इस काल में अनेक विदुषी महिलाऐं हुई जिन्होंने वेदों की रचना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऋग्वेद में ऐसी 24 महिलाओं के नाम मिलते हैं तथा ऋग्वेद के कुल 422 मंत्र महिलाओं से सम्बन्धित हैं। वेदों की रचना में योगदान करने वाली प्रमुख महिलाओं में घोषा, अपाला, विश्वंभरा, श्रद्धा, संध्या, देवयानी, शची, अदिति, लोपामुद्रा आदि का नाम प्रमुख है।

विदुषी घोष ने ऋग्वेद के 10वें मण्डल के 39 व 40वें सूक्त की रचना की। ऋषिका रोमशा ने ऋग्वेद के 1/27/7 मंत्रों की रचना की। विदुषी विश्वंभरा ने 5/28 वे मंत्र की रचना की। इसी प्रकार विदुषी अपाला द्वारा 9/59 मंत्र की रचना की। इस प्रकार वैदिक साहित्य के सृजन में महिलाओं का योगदान उस समय की उन्नत शैक्षणिक स्थिति को दर्शाता है।

इसके साथ ही इस काल में महिलाओं ने शिक्षा के नये कीर्तिमान स्थापित किये। इन्द्र की माता अदिति चारों वेदों में पारंगत थी। विश्वंभरा ने अपने वैदिक ज्ञान के बल पर ऋषित्व का पद प्राप्त किया। विदुषी ताप्ती ने अपने पुत्र कुरू को वेदों की शिक्षा दी। राजा कुशध्वज की पुत्री वेदवती ने अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक शिक्षा को समर्पित कर दिया। अभृण ऋषि की पुत्री वाक् ने वेदों के प्रकाश में अन्न पर अनेक अनुसंधान किये।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वैदिक काल में महिला शिक्षा की स्थिति उन्नत थी।

वैदिक कालीन समाज व महिला

वैदिक काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी थी। परिवार में महिला सम्मान प्राप्त करती थी। बालिका जन्म को मंगलकारी माना जाता था तथा इस अवसर पर उत्सव का आयोजन होता था। विदुषी कन्याओं की प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की जाती थी। महिला के बिना परिवार की कल्पना सम्भव नहीं थी। पुत्र व पुत्री में कोई भेद नहीं किया जाता था। परिवार व समाज में महिलाऐं स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन यापन करती थी। शिक्षा पूर्ण करने के बाद ही वह विवाह करती थी। विवाह हेतु स्वयंवर प्रथा प्रचलित थी। विवाह का निर्णय स्वयं कन्या का होता था। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए महिलाएं आजीवन ब्रह्मचारी भी रहती थी। सामाजिक उत्सवों में महिला की उपस्थित शुभ व अनिवार्य मानी जाती थी।

उक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि वैदिक कालीन समाज महिला पुरूष की समानता पर बल देता है। इस काल में महिला अत्याचार का कोई उदाहरण देखने को नहीं मिलता। अतः सामाजिक रूप से महिलायें सशक्त व सुदृढ़ थी। समाज में लिंगभेद, सतीप्रथा, बाल–विवाह, कन्या वध, बलात्कार व महिला शोषण जैसी प्रथाओं का चलन नहीं था।

वैदिक कालीन धार्मिक जीवन व महिला

इसकाल में महिलाओं को धार्मिक क्षेत्र में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। वैदिक अनुष्ठान व यज्ञ में सर्वप्रथम सविता देवी का आनान किया जाता था। जो महिला सशक्तीकरण का उदाहरण है। इस काल में महिलाऐं पति की अर्द्धांगिन के रूप में हर धार्मिक अनुष्ठान में सम्मिलित होती थी। महिलाओं के बिना किसी

प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान नहीं होता था। इस प्रकार इस काल में महिलाओं को धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

वैदिक कालीन राजनीतिक जीवन व महिला

सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक पक्ष के साथ ही वैदिक काल में महिलाओं का राजनीतिक पक्ष भी मजबूत था। ऋग्वेद में विश्पाला के सैनिक शिक्षा प्राप्त कर युद्ध में भाग लेने का उल्लेख मिलता है। उसने युद्ध क्षेत्र में अपना एक पैर भी खो दिया था। इसी प्रकार रानी शियसी, राजा मुद्गल की रानी मुद्गलानी के युद्ध में भाग लेकर अपने साहस व शौर्य के प्रदर्शन का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि वैदिक कालीन महिलायें राजनीतिक रूप से सुदृढ़ थी। वे युद्ध कला, शास्त्र विद्या व चक्रव्यूह रचना का ज्ञान प्राप्त कर युद्ध क्षेत्र में अपना लोहा मनवाती थी। इस प्रकार वे राजनीतिक जीवन में एक कुशल योद्धा, प्रशासक, राजाओं की सलाहकार व राजसभाओं में अपने शास्त्रार्थ के द्वारा अपनी एक अलग पहचान रखती थी।

निष्कर्ष

इस प्रकार इस शोध के आधार पर हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वैदिक कालीन समाज में महिलाओं का विकास अपने चरम पर था। महिलाऐं शैक्षिक, राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से सबल व सशक्त थी। वे हर क्षेत्र में अपने ज्ञान, अनुभव एवं पराक्रम का लोहा मनवाती थी। वे निजी व सार्वजनिक जीवन में स्वतन्त्रता पूर्वक निर्णय ले सकती थी। अतः वैदिक कालीन भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति पर यह शोध वर्तमान महिला विकास को एक नई दिशा देगा। प्राचीन भारत में महिलाओं की उन्नत स्थिति एवं पश्चात् वर्ती कालों में महिलाओं की स्थिति के ह्रास को समझाने में मदद करेगा। हमें हमारे प्राचीन साहित्य एवं संस्कृति में मौजूद मूल्यों को अपनाकर महिला विकास के नये आयाम तय करने होंगे। महिलाओं से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान हमें अतीत में तलाशना होगा तभी महिला विकास को नई दिशा मिलेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *H. HP./Women in Vedic Era.*
2. *ऋग्वेद, पंचम मण्डल, सूक्त 61*
3. *ऋग्वेद, प्रथम मण्डल, सूक्त 32, मंत्र–9*
4. *भार्गव, वी.एस. 'प्राचीन भारतीय इतिहास' प्राईम बुक हाउस दिल्ली, 1972*
5. *ओमप्रकाश, 'प्राचीन भारत का सामाजिक, आर्थिक इतिहास' विश्व प्रकाशन, दिल्ली।*
6. *उपाध्याय भागवत् शरण, भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण : वीणा प्रकाशन 2016*